DR. SUMAN LAL RAY
Guest Assistant Professor
Deptt. of Sanskrit
S.R.A.P. College, Bara chakia
BRABU - Muzaffarpur

B.A. (Hons.) Part — III
Subject — SANSKRIT
Paper — VII
Short Notes

5×4 = 20 Marks
Dated - 23.07.2020

अलङ्कारों के सोदाहरण लक्षण —

6. अर्थान्तरन्यास अलङ्कार

अर्थगत अलङ्कारों में अर्थान्तरन्यास भी एक है। कभी-कभी कवि अपनी विशेष बात का किसी सामान्य कथन की सहायता से अथवा किसी सामान्य कथन का अपनी विशेष बात के समर्थन से दृढ़ीकरण करता है— इसे ही अर्थान्तरन्यास अलंकार कहते हैं। अर्थान्तरन्यास अलङ्कार का मम्मटोक्त लक्षण इस प्रकार है —

"सामान्यं वा विशेषो वा तदन्येन समर्थ्यते।
यत्र सोऽर्थान्तरन्यासः साधर्म्येणेतरेण वा ॥" (का०प्र० 10/109)

अर्थात् साधर्म्य या वैधर्म्य द्वारा जहां सामान्य का विशेष से अथवा विशेष का सामान्य से समर्थन होता है, वहां अर्थान्तरन्यास अलङ्कार होता है। प्रथम उदाहरण — सामान्य का विशेष से समर्थन —

'बृहत्सहायः कार्यान्तं क्षोदीयानपि गच्छति।
सम्भूयाम्भोधिमभ्येति महानद्या नगापगा ॥' (माघ 2/100)

यहाँ बड़ों की सहायता से छोटों द्वारा कार्यसिद्धि रूप पूर्वार्धोक्त सामान्य अर्थ का पहाड़ी नदी का महानदी में मिलकर समुद्रमिलनरूप उत्तरार्धोक्त विशेषार्थ से साधर्म्य के कारण समर्थन किया गया है।

द्वितीय उदाहरण — विशेष का सामान्य से समर्थन —

"यावदर्थपदां वाचमेवमादाय माधवः।
विरराम महीयांसः प्रकृत्या मितभाषिणः ॥"

यहाँ पूर्वार्धोक्त विशेष श्री कृष्ण की गुरुवाणी का उत्तरार्धोक्त सामान्य अर्थ से समर्थन किया गया है।

वैधर्म्य के कारण अर्थान्तरन्यास —

"इत्थमाराध्यमानोऽपि क्लिश्नाति भुवनत्रयम्।
शाम्येत् प्रत्यपकारेण नोपकारेण दुर्जनः ॥'

यहाँ द्वितीयार्द्धगत सामान्यार्थ से प्रथमार्द्धगत विशेष का समर्थन वैधर्म्यभाव से किया गया है।

— o —

क्रमशः जारी